पर्यावरण जागरूकता से वातावरण सुधरता है

एक अध्ययन का निष्कर्ष है कि जिन प्रांतों में पर्यावरण आंदोलन को ज़्यादा समर्थन मिलता है, उनमें कार्बन उत्सर्जन कम होता है। बात अमरीका की है। मिशिगन विश्वविद्यालय के थॉमस डीट्ज़ और उनके साथियों द्वारा किए गए इस अध्ययन में 1990 के बाद हर प्रांत में उत्सर्जित कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा और वहां चल रहे पर्यावरण आंदोलनों की शक्ति के असर पर ध्यान दिया गया।

डीट्ज़ के मुताबिक किसी भी प्रांत में पर्यावरण आंदोलन की सक्रियता के परिणामस्वरूप वहां कार्बन डाईऑक्साइड का उत्सर्जन कम होता है। यह कमी सामान्य तौर पर अपेक्षित कमी से अधिक रही है। उनके मुताबिक कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन पर सर्वाधिक असर जनसंख्या वृद्धि और बढ़ती सम्पन्नता का पड़ता है। दूसरे शब्दों में, जब ज़्यादा लोगों के पास ज़्यादा पैसे होते हैं तो वस्तुओं और ऊर्जा की खपत बढ़ती है।

कार्बन डाईऑक्साइड के उत्सर्जन के आंकड़े जुटाना तो आसान है किंतु पर्यावरण आंदोलन को मिलने वाले समर्थन को कैसे आंकेंगे? डीट्ज़ के दल ने इसका एक परोक्ष तरीका निकाला। उन्होंने यह देखा कि प्रत्येक प्रांत के संसद सदस्यों का संसद में मतदान का रिकॉर्ड क्या रहा। एक पर्यावरण समूह लीग ऑफ कंज़र्वेशन वोटर्स इस मतदान का रिकॉर्ड रखता है और उसे श्रेणीबद्ध करता है। डीट्ज़ का कहना है कि वे यह नहीं कह रहे हैं कि संसद में मतदान से उत्सर्जन पर असर हो रहा है। उनका कहना है कि मतदान का रिकॉर्ड दर्शाता है कि किसी प्रांत में पर्यावरण आंदोलन का कितना दबदबा है।

अध्ययन में देखा गया कि चाहे कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन को बढ़ाने वाले मुख्य कारकों में वृद्धि होती रहे, फिर भी पर्यावरणवादी आंदोलन इन कारकों के असर को निरस्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, किसी प्रांत के पर्यावरण स्कोर में 1 प्रतिशत की वृद्धि जनसंख्या वृद्धि के कारण बढ़ने वाले उत्सर्जन को उदासीन कर देती है।

डीट्ज़ का कहना है कि वे सिर्फ इस बात को ध्यान में नहीं ले रहे हैं कि किसी प्रांत में पर्यावरण के लिए मुहिम चलाने वाले कितने संगठन हैं, बल्कि इन बातों पर ध्यान दे रहे हैं कि प्रांत में किस तरह नीतियां अपनाई जाती हैं, नियमों का पालन कितनी सख्ती से किया जाता है और कंपनियां व नागरिक किस हद तक खुद होकर उत्सर्जन में कमी के प्रयास करते हैं।

वैसे सब लोग इस अध्ययन के निष्कर्षों से आश्वस्त नहीं हैं। कुछ लोगों का कहना है कि संसद में सदस्यों का मतदान का रिकॉर्ड अपने आप में कोई मायने नहीं रखता।

अलबत्ता, इतना तो कहा ही जा सकता है कि यदि पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ेगी तो उसका बहुआयामी असर स्वाभाविक है। ***(स्रोत फीचर्स)***